International Journal of Enhanced Research in Educational Development (IJERED)
ISSN: 2320-8708, Vol. 8 Issue 3, May-June, 2020, Impact Factor: 5.246

अमीन साहेब: भ्रष्टाचार की कुचालों का सच्चा चित्रण

डॉ. वीरेंद्र कुमार

एसोसिएट प्रोफेसर, राजधानी कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, भारत

रमाशंकर श्रीवास्तव की हिंदी एवं भोजपुरी में लगभग 45 पुस्तकें हैं। इनमें लगभग 18 हिंदी के उपन्यास हैं। इन्हें हिंदी अकादमी, दिल्ली द्वारा हास्य व्यंग्य लेखन के लिए 'काका हाथरसी सम्मान 'प्राप्त हुआ है। इसके साथ दिल्ली हिंदी साहित्य सम्मेलन का 'साहित्य श्री सम्मान 'प्राप्त हुआ है और विश्व भोजपुरी सम्मेलन द्वारा 'भोजपुरी साहित्य गौरव सम्मान 'प्राप्त हुआ है। इन के उपन्यासों पर जो चर्चा एवं समीक्षा होनी चाहिए थी वह नहीं हुई है।

'अमीन साहेब 'रमाशंकर श्रीवास्तव का उपन्यास 2002 में आया लेकिन अधिक चर्चा इसे नहीं मिली। यद्यपि हिंदी उपन्यास जगत में यह एक महत्त्वशाली उपन्यास है। उपन्यास में जमीन का एक टुकड़ा एक समस्या बनकर उभरता है, जो बिहार के भोजपुरी अंचल के तारापुर गांव में है।

तारापुर गांव धीरे-धीरे कस्बे में बदल रहा है। छोटे बड़े झगड़े पहले भी होते थे लेकिन सुबह का झगड़ा शाम को मिट जाता था। लोग जल्दी ही आपस में घुल मिल जाते थे। इस उपन्यास में उपन्यासकार ने हमारी व्यवस्था की बाहरी परत को पूरी तरह अनावृत्त करके रख दिया है। गांव में मुखिया, पटवारी, अमीन, कानूनगो और व्यवस्था से जुड़े तमाम लोगों में किस कद्र भ्रष्टाचार फैला हुआ है इसकी सच्ची तस्वीर उपन्यास में दिखाई पड़ती है। बालम सिंह जैसे लोग अमीन और दूसरे व्यवस्था से जुड़े हुए व्यक्तियों को खरीद लेते हैं, कभी किसी पर हमला करवा दिया जाता है तो कहीं किसी को धमकी देकर चुप बैठा दिया जाता है। इस प्रकार उपन्यास में हमारे सामाजिक जीवन में व्याप्त अनेक प्रकार की भ्रष्टाचारी अनीति का सच्चा चित्रण दिखाई पड़ता है उपन्यासकार ने 'अमीन साहेब 'उपन्यास में एक संदेश भी दिया है कि इन लड़ाई झगड़ों और मुकदमों में पढ़कर मनुष्य की सारी शांति और सच्चा सुख निचुड़ जाता है।

उपन्यासकार प्रारंभ में लिखता है "इसी गांव के निवासी सुरेश सिंह और यमुना देवी के घरों के बीच नीम का एक पेड़ था। उसकी एक डाल टेढ़ी थी । लोग उसे टेढ़ी नीम कहते थे। उस पेड़ के नीचे गांव के धार्मिक आध्यात्मिक अनुष्ठान होते थे।"1

सुरेश सिंह मथुरा रिफाइनरी में काम करते थे। वहां से जब वह गांव लौटते हैं तो उन्हें यह देखकर हैरानी होती है "पिछले सावन में जब आए थे तब यह रास्ता खुला हुआ था। गांव के दो टोलों को जोड़ता था यह रास्ता। उनके घर के सामने से यही रास्ता जाता था।"2

सुरेश सिंह ने अपनी चाची यमुना देवी से पूछा कि यह रास्ता किसने बंद कर दिया? तो वह कहती हैं "रास्ता हम ने बंद कर दिया। हमारी जमीन में गांव वालों ने अब आम रास्ता बना रखा था।"3

सुरेश सिंह अपने गांव के मुखिया के पास जमीन की सच्चाई का पता लगाते हैं तो यह स्पष्ट होता है "नीम वाली जमीन सुरेश सिंह की है। उस पर यमुना देवी का कोई हक नहीं बनता।"4

सुरेश सिंह अपने गांव के पटवारी के पास भी जमीन की सच्चाई जानने के लिए जाते हैं। सुरेश सिंह अपने मन की बात दोस्त के सामने प्रकट करते हैं तो वह बोले "अमीन द्वारा पैमाइश कराकर उस जमीन पर कब्जा करो ।"5

सुरेश सिंह अपनी मां से जमीन के टुकड़े के संबंध में पूछते हैं कि यह वास्तव में किसका है? तो मां बोलती हैं "तुम्हारे पिताजी भी थे तब दो बार इस जमीन के लिए लाठियां चली थी। वे मुकदमा नहीं लड़ना चाहते थे। चुप लगा कर बैठ गए।"6

उपन्यासकार ने मुकदमे बाजी और इस लड़ाई झगड़े में यह स्पष्ट करने का प्रयास किया है कि इन मामलों में सीधे सच्चे आदमी की हानि अवश्य होती है जो एक सच्चाई दिखाई देती है ।

सुरेश सिंह अपने गांव तारापुर के इस जमीन के टुकड़े को लेकर और अधिक चिंतित हो जाते हैं जिस पर यमुना देवी ने कब्जा कर लिया है। उन्हें अपने स्वाभिमान पर चोट दिखाई पड़ती है। तारापुर में उस टेढ़ी नीम की छाया में हर साल भागवत कथा होती थी ।यमुना देवी को यह अच्छा नहीं लगा इसलिए वह घोषणा कर देती हैं "यहां अगले साल से कथा नहीं होगी। आप लोग और जगह ढूंढ लें ।"7

यमुना देवी सीधी सादी तरह की स्त्री नहीं होती हैं। मुखिया बालम सिंह ग्राम पंचायत के सरपंच राघो को जब बुलाते हैं तो वह कहता है "सब के बाद यह एक औरत का मामला है। संसार भर में लोगों की धारणा है कि पुरुष समाज औरतों पर अत्याचार करता है ।कितनी औरतें अब खुल्लम-खुल्ला पुरुषों को चुनौतियां देने लगी हैं।"8

सुरेश सिंह और यमुना देवी के इस मामले में यमुना देवी की हठधर्मिता तर्कसंगत प्रतीत नहीं होती है। सुरेश सिंह अपनी जगह सही होते हैं। लेखक ने सुरेश सिंह और यमुना देवी की इस जमीन की लड़ाई में यह स्पष्ट किया है कि अंततः इस झगड़े में हानि दोनों ही पक्ष उठाते हैं।

उपन्यास में स्पष्ट हुआ है कि यमुना देवी के साथ उनके पति त्रिलोकीनाथ का जीवन सुखमय नहीं था ।वे गृह क्लेश के कारण बैरागी बन गए थे। यमुना देवी त्रिलोकीनाथ के भाई से भी लड़ पड़ती थी। अपने बेटे से भी यमुना के विचार नहीं मिलते थे ।सुरेश सिंह मथुरा से छुट्टी लेकर जब आए तब गांव का मुखिया और सरपंच राघो इस मामले में सुरेश सिंह का पक्ष लेकर कहते हैं "इसमें सुरेश सिंह को आगे बढ़ने दीजिए। उनका भी दावा गलत नहीं है राघोजी ने कहा।"9

तारापुर गांव का मुखिया बहुत चालाक प्राणी होता है। सुरेश सिंह और यमुना देवी को आपस में लड़ा कर और उनके झगड़े को सीढ़ी बनाकर वह और उसके वृद्ध पिता रामायन सिंह यमुना के बागीचे वाली जमीन को हड़पने का प्रयत्न करते हैं। उपन्यास में यही कथा मुख्य कथा बनकर उभरती है जो अंत तक बनी रहती

है। तारापुर गांव के मुखिया बालम सिंह अपने हित साधन में लगे रहते हैं "बालम सिंह का जहां खेत था वहां यमुना देवी का भी आम का एक बड़ा बागीचा और खेत था। यह बिल्कुल सड़क के किनारे थे। उस सड़क पर रात दिन बड़े वाहनों ट्रक बस मोटर कार आदि की आवाजाही लगी रहती थी इसीलिए भी उस जगह ऑटोमोबाइल वर्कशॉप खोलना चाहते थे।उसके लिए यमुना देवी से भी खेत और बागीचा लेना चाहते थे श्री राम"10

मुखिया बालम सिंह के रामायन सिंह इस काम के लिए बहुत व्याकुल थे। उन्होंने परमारथ कुर्मी को लगा दिया। बालम सिंह उनके कंधे पर बंदूक रखकर शिकार करना चाहते हैं। परमारथ मुखिया बालम के एहसान की कीमत चुकाना चाहता था "इसलिए मैं चाहता था कि यमुना देवी को समझा-बुझाकर खेत बेचने के लिए तैयार कर दिया जाए। इसके लिए वह प्रयासरत था।"11

परमार्थ कुर्मी हर प्रकार के दुष्कृत्य के लिए तत्पर रहता है। वह कुछ लोगों को परलोक भी भेज चुका है।

तारापुर गांव के पास दुकानों की आबादी बढ़ जाने के कारण धीरे-धीरे उसे तारापुर की चट्टी कहा जाने लगा था। हीरा बाबू संध्या को यहीं आकर बैठते थे। यमुना देवी ने हीरा बाबू से कुछ बातें पक्की कर लीं । हीरा बाबू और बालम सिंह की बनती नहीं थी। दिवाली के दिन निकट थे। घर की साफ सफाई में बालम सिंह कोई कागज ऐसा मिल गया जिसमें यमुना देवी को पराजित किया जा सकता था "बालम सिंह के हाथ कागज का एक पुलिंदा लग गया। कागज को पढ़ते ही आंखें खुशी से चमक उठी..... जो इस बात का सबूत है कि यमुना के पति त्रिलोकी रात में मुझसे ₹3000 लिए थे। इतने साल का सूद जोड़ो तो ₹8000-9000 और चढ़ जाता है।"12

हरेंदर लाल यमुना का दामाद यमुना देवी के घर जब पहुंचता है तो मुखिया बालम सिंह को पता चल जाता है "जमुना देवी का दाम आज छुट्टी में अपने गांव आया है। मेरी चिट्ठी तो उसे मिली ही होगी। कलभोर में साइकिल से जाओ और हरेंदर लाल से कहो कि मुखिया जी इंतजार कर रहे हैं।"13

इस प्रकार मुखिया बालम सिंह परमार्थ कुर्मी को कह कर भेज देता है। बालम सिंह कर्ज लेने से संबंधित चिट्ठी के बारे में परमार्थ कुर्मी के हाथ समाचार से यह जानना चाहते हैं कि वास्तव में यमुना देवी इसका जवाब क्या देती हैं?

जमीन की पैमाइश के लिए यमुना देवी ने हीरा बाबू को कार्यभार सौंप दिया। हाकिम हुकामो से संपर्क करते करते हीरा बाबू व्यवहार कुशल बन गए थे। वे अमीन भोला प्रसाद के यहां पहुंच जाते हैं "हीरा बाबू ने तरह-तरह से उन्हें समझाया कि नापी में थोड़ा ख्याल रखेंगे। अग्रिम ₹50 का नोट उनके हाथ में रख कर चले आए ।"14

उपन्यास में अनेक पात्र हैं जो असद चरित्र के भी हैं और सद चरित्र के भी हैं हीरा बाबू सद चरित्र के पात्र हैं, मुखिया बालम सिंह की चाल और कुचालों से यमुना देवी को बचाने का प्रयास करते हैं जो अपनी जगह बहुत स्वाभाविक जान पड़ता है। अमीनों की पंक्ति में अनेक अमीन ऐसे हैं जो बेईमानी और अनीति में कुशल हैं लेकिन भोला प्रसाद उनमें से कुछ अलग प्रकार के अमीन हैं। अमीन भोला प्रसाद आए तो यमुना

देवी की ओर से हीरा बाबू और सुरेश सिंह की ओर से बालम सिंह मुखिया ने अपने-अपने कागज दिखाए। इस प्रक्रिया में गर्मा गर्मी के बीच अमीन की कड़ी जरीब उठा कर पेड़ की ओर फेंक दिया। कुछ लोगों ने रोका तो गाली गलौज शुरू हो गई "बालम सिंह ने कहा अमीन साहेब आज नापी रोक दीजिए। बाद में देखेंगे। अमीन साहब लौट गए। 15

इस संबंध में अमीन भोला प्रसाद के बाद दूसरे अमीन को बुलाने का सवाल उठ गया। शकूर मियां को इलाके के अनेक लोग जानते थे उनको बुलाने का प्रस्ताव आया "तारापुर में चर्चा गर्म हो गई कि इस बार जमीन नापने शकूर मियां आ रहे हैं। 16

यमुना देवी के दामाद हरेंदर लाल को तारापुर में बालम सिंह मुखिया अपने घर बुलाते हैं, हरेंदर लाल जब बालम सिंह के घर पहुंचता है तो मुखिया के पिता रामायन सिंह मिल जाते हैं जो बड़े वाकपटु हैं और वह हरेंदर से कहते हैं "आपकी सास का खेत और बागीचा जहां है वहां बालम सिंह कोई कल कारखाना बैठाना चाहते हैं। अपनी सास से कहकर बगल वाला खेत दिलवा दीजिए।"17

मुख्या बालम तो अपनी चालबाजी से यमुना देवी को फंसाकर स्वार्थ सिद्धि में ही लगा हुआ है जबकि उसके पिता रामायन सिंह उम्र की बढ़ौती में भी इस लोभ लालच से दूर नहीं हुए हैं।

सुरेश सिंह नौकरी से अपने तारापुर गांव आते हैं तो मेडिकल भिजवा कर छुट्टी बढ़ाते हैं। अमीनों के चक्कर में और उनके स्वागत सत्कार में लगे रहते हैं "ये जितने अफसर अमीन कानूनगो हैं चेहरा देखकर काम करते हैं। अमीनो के पीछे कई ₹100 अब तक खर्च हो गए। हमेशा उनके स्वागत सत्कार में लगे रहो उनकी हां में हां मिलाओ ताकि कहीं उनकी गुनिया की नोक तुम्हारी गर्दन न छेद दे।"18

अमीन भोला प्रसाद को मुखिया बालम फँसाने की कोशिश में लगे रहते हैं और बालम सिंह के पिता बेटे से भी बढ़कर नजर गड़ाए हैं। ईमानदार अमीन भोला प्रसाद कहते हैं "बालम सिंह को खुश करने के लिए मैं यमुना का खेत आधा काटकर उनके खेत में मिला दूं? मन तो झल्ला गया। जी में आया कि कह दूं कि मुखिया अच्छा इंसाफ है आपका। दूसरे का हक हड़पने के लिए ताक लगाए बैठे हैं और उनके बाप तो उनसे भी सवा शेर हैं वहीं रामायन सिंह। एक पैर कब्र में लटका है फिर भी मन की तृष्णा मरने को तैयार नहीं।"19

यमुना देवी का दामाद हरेंदर लाल यमुना देवी को झांसे में रखकर उसकी जमीन खेत और बागीचा बेचने के लिए शिवनाथ से बातचीत बढ़ाता है। शिवनाथ बालम सिंह से खफा होता है। डॉक्टर राय को बालम सिंह कहते हैं "बखेड़ा बढ़ेगा। आप जानते हैं कि डकैती वाले केस में मेरी गवाही से शिवनाथ सिंह मुझसे चिढ़ा बैठा है। अब उस डाकू से निपटना होगा।"20

शिवनाथ अगर यमुना देवी का खेत ले लेगा तो बालम सिंह उसे कैसे खरीद पाएंगे।?

उपन्यासकार ने मानव रिश्तो में दामाद के चरित्र को इस उपन्यास में सच्चाई के साथ उभारा है। हरिंदर लाल यमुना देवी का दामाद है, अच्छे संस्कार वाला मनुष्य नहीं है। वह यमुना देवी को चकमा देता रहता है

और अपनी दामादी का फायदा उठाता है। बालम सिंह मुखिया हरिंदर लाल को फुसलाने की कोशिश में लगा रहता है ताकि यमुना देवी की जमीन हाथ लग जाए। यमुना देवी का पुत्र अपनी मां के आतंकी स्वभाव से पहले ही दूर चला गया है "वह एक दबंग महिला थी ।उस की तानाशाही के आतंक से बेटा भागकर परदेश में जा बैठा। 15 साल हो गए, उसने तारापुर की ओर घूम कर नहीं देखा। मां मरी है या जिंदा है। एक चिट्ठी तक नहीं। पति जाने कहां साधु बनकर चले गए।"21

मुकदमे बाजी की भाग दौड़ में मनुष्य अपना तमाम सुख चैन गवाँ देता है यह उपन्यासकार सुरेश के माध्यम से स्पष्ट कर रहा है। टेढ़ी नीम वाली जमीन के चक्कर में सुरेश सिंह को अपनी नौकरी गंवानी पड़ी "तारापुर के मामले में फंसे 3 साल से ऊपर हो गए। सुरेश सिंह नौकरी से निकाल दिए गए।"22

यमुना देवी के दामाद हरेंदर लाल भी जमीन के झगड़े के चलते हुए यमुना के कई खेत बेच देते हैं "हरेंदर लाल ने यमुना चाची को बहला-फुसलाकर कई खेत बेच डाले ।भगवान जाने यह सारा पैसा कहां जा रहा है ।"23

बालम सिंह यमुना देवी के दामाद हरेंदर लाल पर हमला करवा देता है। पुजारी जी हीरा बाबू को सचेत कर ही रहे थे और यमुना के घर हीरा इस संबंध में सावधान करने जा ही रहे थे कि वे देखते हैं कि हरेंदर के सिर और हाथों पर पट्टियां बंधी हैं। मुखिया बालम सिंह को हीरा बाबू से सदैव शिकायत रहती है "जबसे हरेंदर लाल को पीटा गया है तब से हीरा बाबू यमुना देवी के घर फिर आने जाने लगे हैं। उनका यह मेल हमारे लिए अच्छा नहीं है। क्योंकि किसी भी दशा में हीरा गलत बयानी नहीं करेगा।"24

इस प्रकार उपन्यासकार ने उपन्यास में सद और असद दोनों तरह के चरित्रों का निर्माण कर यह स्पष्ट किया है कि गांव में अगर बुरे चरित्र वाले लोग हैं तो अच्छे चरित्र वाले भी लोग हैं इसीलिए बालम सिंह के सामने हीरा बाबू जैसे लोगों को खड़ा करके उपन्यासकार मानवीय मूल्यों के यथार्थ चित्रण की ओर आगे बढ़ता है।

यमुना देवी की बागीचे वाली जमीन के चक्कर में हरेंदर लाल की भी नौकरी छूट जाती है, लंबे समय तक वह नौकरी पर नहीं गए। मुखिया बालम सिंह सरकारी अमीन को फुसलाकर फैसला अपने पक्ष में करा लेते हैं "मुखिया जी ने सरकारी अमीन को कुछ ले देकर फैसला अपने पक्ष में करा लिया है ऐसा सभी महसूस करते हैं।"25

इस स्थिति से निपटने के लिए यमुना देवी के दामाद हरेंदर लाल ने कोर्ट में यथास्थिति बहाल करने के लिए आवेदन किया "कोर्ट ने स्टे ऑर्डर देकर यथास्थिति का सुझाव दिया। इसलिए बालम सिंह की विस्तार योजना में बाधा पड़ी।"26

उपन्यास में आर्थिक घटनाओं के बीच सामाजिक एवं सांस्कृतिक समस्याओं को भी उभारा है। उपन्यास के मध्य में हीरा बाबू की बेटी कलावती की शादी का टूट जाना ऐसा ही मार्मिक प्रसंग है। कलावती की शादी पहले तय हो जाती है और हीरा बाबू कहीं से कर्ज लेकर सारी व्यवस्थाएं करते हैं कि अचानक यह संदेशा आता है कि बारात नहीं आएगी ।हीरा बाबू अपने साईकिल उठाकर लड़के वालों के यहां पहुंच जाते हैं तो

लड़के के पिता कहते हैं "हीरा बाबू आप जरा नाटक कम कीजिए। मेरी भी उम्र हुई। मैंने पता लगा लिया है । कोई बुढ़िया यमुना देवी है। वह अपने घर में ऐसे गलत संबंधों को बढ़ावा देती हैं. ..... मथुरा बाबू यह सब झूठ है। मेरी बेटी निर्दोष है। यह काम मेरे दुश्मनों का है।"27

इस प्रकार उपन्यास में बालम सिंह जैसे असद चरित्र अपने दूर व्यवहार और भ्रष्टाचारी रूप के कारण हीरा बाबू की बेटी का विवाह कटवा देते हैं ताकि वह यमुना देवी का साथ छोड़ दे। बागीचे वाली जमीन की पैमाइश के लिए कुछ दिनों बाद शांति कुमार जैसे अमीन तारापुर की जमीन पर फैसला करने आते हैं। अमीन साहब देख समझकर अगले महीने की 20 तारीख तय करके चले गए। रामायन सिंह ने अपने बेटे बालम सिंह को समझाया "मैंने भी कई सालों तक मुखिया गिरी की है। इन सरकारी लोगों की चाल खूब समझता हूं। ये जितने अमीन, पटवारी अथवा लेखपाल होते हैं बिना कुछ लिए दिए काम एक अंगुल भी आगे नहीं बढ़ाते।"28

तारापुर में 20 तारीख को सरकारी अमीन शांति कुमार और राम रूप मांझी आकर अपना फैसला सुनाते हैं "दोनों सरकारी अमीन इस निष्कर्ष पर पहुंच चुके थे कि बालम सिंह की जमीन यमुना देवी के बागीचे में पड़ती है।"29

इस प्रकार तमाम उठापटक के बाद बालम सिंह जैसा व्यक्ति अमीनों को खरीद कर अपने पक्ष में फैसला करवा लेता है। उपन्यासकार व्यवस्था में व्याप्त भ्रष्टाचार की सच्ची तस्वीर 'अमीन साहेब 'उपन्यास में खींच देता है। सच्चा और ईमानदार व्यक्ति इस पूरी व्यवस्था से लड़ कर भी हार जाता है और व्यवस्था में ऊपर से नीचे तक व्यक्ति बिक जाते हैं। हरेंदर लाल यमुना देवी की संपदा पर अंगूठा लगवा कर उसकी जायदाद को हड़प लेना चाहते हैं किंतु ऐन मौके पर हीरा बाबू आकर उसकी इस चाल को कामयाब नहीं होने देता है। अस्पताल जा रही यमुना देवी की दशा ठीक नहीं होती। पूरी कहानी का पटाक्षेप तब होता है जब यमुना देवी का पुत्र प्रभात आकस्मिक प्रकट हो जाता है और यमुना देवी के प्राण का अंत हो जाता है। प्रभात आकर बागीचे वाली जमीन पर स्कूल बनवाने का काम शुरू कर देते हैं और केवल विवादित जगह को छोड़ देते हैं।

उपन्यासकार का उद्देश्य व्यवस्था में जुड़े हर पायदान पर बैठे व्यक्ति- चरित्र को प्रकाशित करना और भ्रष्टाचार की नग्न तस्वीर को यथार्थ रूप में प्रकट करना है। अपनी अनेक चालों से बालम सिंह जैसे मुखिया सीधे भले लोगों का शोषण करते हैं किंतु उपन्यास में ईमानदार छवि वाले हीरा बाबू जैसे लोग भी हैं जो यमुना देवी की मदद में आ जाते हैं हालांकि यमुना देवी अपनी कट्टरता और हठधर्मिता के स्वभाव के कारण जहां कुछ दुर्बलता लेकर आगे आती है, वहां उसके अंदर जीवटता और संघर्षशीलता जैसे मूल्यों को लेखक उभारता है जो उपन्यास में लेखक की यथार्थवादी दृष्टि और उनकी गहरी सूझबूझ का परिचय देती है। कथानक में भी बिखराव नहीं है, कथानक में अद्भुत प्रवाह रहता है, कथानक सीधे अपने लक्ष्य की ओर अविराम गति से बढ़ता जाता है। पाठक में कुतूहल, जिज्ञासा उत्सुकता बने रहते हैं और वह उपन्यास को पढता जाता है। पात्रों की उपन्यास में भरमार नहीं है। चरित्रों के विकास में उपन्यासकार ने प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष पद्धति से चित्रण किया है जो बहुत स्वाभाविक और सहज लगता है। संवाद छोटे हैं और कसावट लिए हुए हैं। उपन्यास की सबसे बड़ी शक्ति इसकी सहज-सरल और संप्रेषणीय भाषा है।

संदर्भ-सूची

' अमीन साहेब'- रमाशंकर श्रीवास्तव - नवराज प्रकाशन, भजनपुरा, दिल्ली-110053, प्रथम संस्करण: 2002

1. अमीन साहेब'- रमाशंकर श्रीवास्तव पृ. 7
2. ----------वही---------- 8
3. ----------वही---------- 9
4. ----------वही---------- 9
5. ----------वही---------- 10
6. ----------वही---------- 11
7. ----------वही---------- 12
8. ----------वही---------- 16
9. ----------वही---------- 19
10. ----------वही---------- 23
11. ----------वही---------- 24
12. ----------वही---------- 31
13. ----------वही---------- 32
14. ----------वही---------- 37
15. ----------वही---------- 53
16. ----------वही---------- 59
17. ----------वही---------- 68
18. ----------वही---------- 71
19. ----------वही---------- 75
20. ----------वही---------- 94
21. ----------वही---------- 99
22. ----------वही---------- 100
23. ----------वही---------- 104
24. ----------वही---------- 113
25. ----------वही---------- 124
26. ----------वही---------- 124
27. ----------वही---------- 137
28. ----------वही---------- 145
29. ----------वही---------- 152
30. ----------वही---------- 155